अहिंसा
संयम
सम्यक दर्शन
सम्यक ज्ञान
सम्यक चारित्र

भारतवासी आएँ काशी

जिनधर्म
जीवन का
उत्तम पथ

तीर्थ की यात्रा
आत्मा को अपने
स्वरूप से मिलाने
की यात्रा है ।

महातीर्थ यात्रा

(पार्ट 2)

डिजिटल डायरेक्टरी

स्मारिका

प्राचीन तीर्थ
अनादि परंपरा
अखंड आस्था
॥ काशी ॥

काशी
जिनधर्म
की
अमर धरोहर

सम्यक् दर्शन
सम्यक् ज्ञान
सम्यक चारित्र

तीर्थ से जुड़ें • संस्कृति से जुड़े • जिनधर्म से जुड़े

॥ काशी • जिनधर्म • अनादि परंपरा • अनंत प्रेरणा ॥

प्रसंग

28 वां
अनेक कल्याणक भूमि वर्षायोग
2026

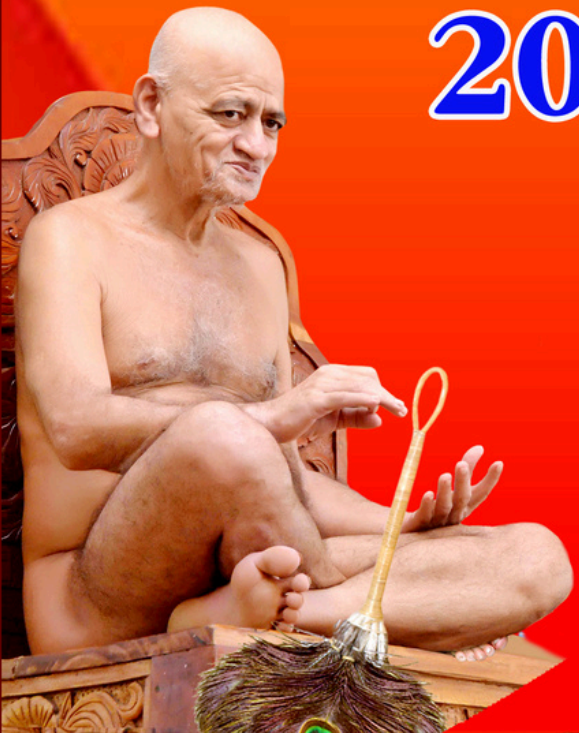

आशीष छांव :- महासमाधि धारक परम पूज्य
आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज

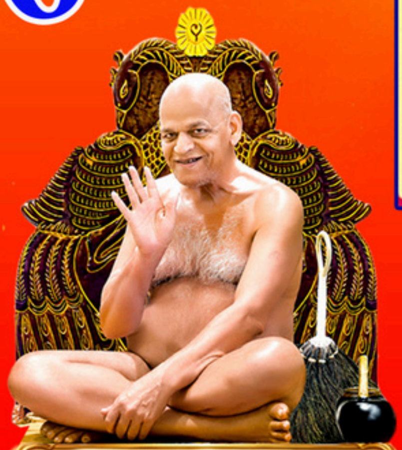

आशीर्वाद प्रदाता :- परम पूज्य
आचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज

प. पू. मुनि श्री 108
धर्म सागर जी महाराज

पुण्यवर्धन सान्निध्य

प. पू. मुनि श्री 108
भाव सागर जी महाराज

चातुर्मास स्थल- श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र भेलूपुर (काशी) वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

आयोजक

आयोजक- श्री दिगम्बर जैन समाज(काशी)वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

भारतवासी आएँ काशी

दिगम्बर जैन

तीर्थकरों की कल्याणक भूमियां

मुनि श्री 108 धर्मसागर जी महाराज एवं मुनि श्री 108 भावसागर जी महाराज की तीर्थ यात्रा
"प्रभु की सुन गाथा, झुकाती है दुनिया माथा "

विश्व के प्राचीनतम शहरों मे काशी - धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक राजधानी है। इस नगर का सभी धर्म के अनुयायियों के लिए विशेष महत्व है।

- यह नगरी कर्मभूमि के प्रारंभ में ही इंद्र के द्वारा बसाई गई थी।
- श्री मल्लिनाथ भगवान के तीर्थ में नौवे चक्रवर्ती पद्म का जन्म भी बनारस में हुआ था।
- हिंदू धर्म के अनुसार काशी में मरण से मुक्ति की प्राप्ति होती है।

श्री महावीर भगवान के समवशरण की रचना तीन बार हुई थी।

वाराणसी के राजघाट में खुदाई के दौरान प्राचीन जैन मंदिर के अवशेष प्राप्त हुए। यहां से प्राप्त सबसे प्राचीन जैन मूर्ति छठी शताब्दी की भगवान महावीर की तथा आठवीं शताब्दी की प्राप्त मूर्ति भगवान पार्श्वनाथ की है। अनेक प्राचीन मूर्तियां सारनाथ के संग्रहालय में हैं। अनेक जानकारी पहाड़पुर में मिले गुप्तकालीन ताम्रपत्र (479 ई.) से भी प्राप्त होते है।

वाराणसी का वर्णन **तिलोय पण्णत्ति ,उत्तर पुराण ,पार्श्वनाथ चरित्र ,ब्र. नेमिदत्त के आराधना कथाकोश** आदि में मिलता है

बनारस (काशी) में आचार्यश्री समंतभद्र स्वामी का भस्मक व्याधि रोग ठीक हुआ था उन्होंने स्वयंभू स्तोत्र की रचना करते हुए चंद्रप्रभ भगवान की स्तुति पढी तो चंद्रप्रभ भगवान की प्रतिमा प्रकट हुई चमत्कार हुआ

1 श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन तीर्थ भेलूपुर वाराणसी

श्री पार्श्वनाथ भगवान की गर्भ, जन्म, तप, कल्याणक भूमि

भगवान पार्श्वनाथ का जन्म 2902 वर्ष पूर्व {877 ईसा पूर्व} में हुआ था। यहां प्राचीन मंदिर मिट्टी के टीले पर था जो कई बार आक्रमणकारियों के द्वारा नष्ट किया गया, इसके बाद 35 वर्ष पूर्व नवीन मंदिर का निर्माण किया गया जो वर्तमान में है, इसी तीर्थ के संग्रहालय (म्यूजियम) में चौथी शताब्दी की प्रतिमाएं रखी है, मंदिर में भी चतुर्थ कालीन सहित प्राचीन अनेक प्रतिमाएं विराजमान है। जन्म स्थल पर खुदाई में प्राप्त सामग्री सुरक्षित हैं।

क्यू आर कोड स्कैन करें या क्लिक करें

संपर्क सूत्र
तीर्थक्षेत्र मैनेजर आवास एवं भोजन व्यवस्था :
विशाल जैन सुरेंद्र कुमार 7317202202

2 श्री चंद्रप्रभ दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र, चंद्रावती

श्री चंद्रप्रभ भगवान की गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक भूमि
(भेलूपुर से 32 किलोमीटर)

रूट
भेलूपुर मंदिर > रेलवे स्टेशन रोड > सिगरा > मलदहिया > चौकाघाट > पुलिस लाइन ओवर ब्रिज (पुल के ऊपर) > आशापुर > सारनाथ, गाजीपुर रोड (नेशनल हाईवे 21) > चंद्रावती चंद्रपुरी

क्यू आर कोड स्कैन करें या क्लिक करें

तीर्थक्षेत्र संपर्क सूत्र :-
श्री मक्खन लाल जी जैन : 88960 20442
श्री पंकज जैन : 97943 32780

3 श्री श्रेयांशनाथ दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र सारनाथ

श्री श्रेयांशनाथ भगवान की गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक भूमि
(भेलूपुर से 12 किलोमीटर)

यहाँ बौद्ध धर्म का 2600 वर्ष प्राचीन धम्मेक स्तूप दिगम्बर जैन मंदिर के पास है। यह विश्व का चौथा धार्मिक स्थल है यहाँ म्यूजियम में अशोक का चिह्न है जो भारत सरकार का राष्ट्रीय चिन्ह है।
सर्व सुविधायुक्त आधुनिक धर्मशाला है।
रूट -भेलूपुर मंदिर > रेलवे स्टेशन रोड > सिगरा > मलदहिया > चौकाघाट > पुलिस लाइन ओवर ब्रिज (पुल के ऊपर) > आशापुर >सारनाथ

क्यू आर कोड स्कैन करें या क्लिक करें

तीर्थक्षेत्र मैनेजर :-
ताराचंद जैन
8052678497

4 श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की कल्याणक भूमि भदेनी जैन घाट, काशी

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक से पवित्र भूमि गंगा नदी तट स्थित भदैनी जैन घाट जो भेलूपुर से 2 किलोमीटर है।
यहां पर दो दिगंबर जैन मंदिर स्थित हैं। यहीं पर जैन स्याद्वाद महाविद्यालय है जिसकी स्थापना सन् 1905 में श्री गणेश प्रसादजी वर्णी द्वारा की गई थी। यहां क्षुल्लक जिनेन्द्र वर्णीजी ने जैन धर्म के एनसाइक्लोपीडिया जिनेन्द्र सिद्धांत की रचना की थी
पंडित भूरामल जी शास्त्री (समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञान सागर जी महाराज जो समाधिस्थ परम पूज्य आचार्य श्री विद्या सागर जी महाराज के गुरु थे उन्होंने शिक्षा ग्रहण की)

क्यू आर कोड स्कैन करें या क्लिक करें

संपर्क सूत्र :-
ब्र आकाश भैया 96953 38108
वीर कुमार जैन 7905777262

सम्पूर्ण जानकारी एवं धर्मशाला कमरा बुकिंग हेतु वेबसाइट पर देखें
Shri Parasnath Jain Tirth Kashi

प्रतिदिन की शांतिधारा देखने /करवाने के लिए लिंक

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन तीर्थ भेलूपुर लोकेशन

श्री दिगंबर जैन समाज (काशी) वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

तीर्थ क्षेत्र अकाउंट नंबर - Kotak bank
ACCOUNT NUMBER - 3350934728
IFSC CODE - KKBK0005323

॥ जय जिनेन्द्र ॥

वाराणसी (काशी) के दिगम्बर जैन मन्दिरों तथा दर्शनीय स्थानों की सूची

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर व धर्मशाला से निम्न स्थानों की दूरी

क्र.सं.	मन्दिर व दर्शनीय स्थान	दूरी कि.मी.
1.	श्री पार्श्वनाथ गर्भ,जन्म,तप कल्याणक भूमि दिगम्बर जैन तीर्थ भेलूपुर -ए.सी. कमरे वाली धर्मशाला एवं भोजनशाला उपलब्ध है	0 कि. मी
2.	श्री खड़गसेन उदयराज श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, भेलूपुर	100 मी.
3.	श्री सुपार्श्वनाथ गर्भ,जन्म,तप ,ज्ञान कल्याणक भूमि दिगम्बर जैन मन्दिर - स्याद्वाद महाविद्यालय, गंगा नदी के किनारे, भदैनी घाट	1.5 कि.मी.
4.	श्री सुपार्श्वनाथ (मन्दिर छेदी लाल ट्रस्ट), गंगा नदी किनारे	1.5 कि.मी.
5.	श्री महावीर स्वामी जिनालय सन्मति जैन मन्दिर, नरिया क) चौबीसी जिनालय, नरिया ख) समोशरण मन्दिर, नरिया ग) श्री गणेश वर्णी {शोध } संस्थान ,नरिया -ए.सी. कमरे वाली धर्मशाला एवं भोजनशाला उपलब्ध है मो. 8434617295	4 कि.मी.
6.	भगवान अजितनाथ जिनालय, भव्य प्रतिमा श्री भगवान पार्श्वनाथ जी, कश्मीरीगंज, खोजवाँ	1.5 कि.मी.
7.	श्री पार्श्वनाथ जैन पंचायती मन्दिर अथवा कांचमंदिर ,ग्वालदास साहू लेन	3 कि.मी.
8.	श्री पार्श्वनाथ जैन मन्दिर (बिहारी लाल दिगम्बर जैन ट्रस्ट), मैदागिन -धर्मशाला उपलब्ध है ,मो. 70710 70710	4 कि.मी.
9.	श्री श्रेयांसनाथ गर्भ,जन्म,तपगर्भ,जन्म,तप ,ज्ञान कल्याणक भूमि दिगम्बर जैन मन्दिर, सिंहपुरी–सारनाथ क) तपोस्थली भगवान श्री श्रेयांसनाथ जी की ख) भगवान ऋषभनाथ, बाहुबली भगवान, भरत भगवान जैन मन्दिर, सिंहपुरी ए.सी. कमरे वाली धर्मशाला एवं भोजनशाला उपलब्ध है	14 कि.मी.
10.	श्री चन्द्रप्रभु भगवान की गर्भ,जन्म,तप,ज्ञान कल्याणक भूमि ,चन्द्रावती ,काशी क) जन्मभूमि श्री चन्द्रप्रभ भगवान चैत्यालय	34 कि.मी.
अन्य प्रसिद्ध स्थान -		
	विश्वनाथ मंदिर (वी टी) (दोपहर 12 से 1 बजे तक बंद रहता है)	4 कि.मी.
	श्री तुलसी मानस मन्दिर, दुर्गाकुण्ड (12 से 4 बन्द), विदेद मन्दिर	1.5 कि.मी.
	श्री काशी विश्वनाथ कॉरिडोर स्वर्ण शिखर एवं स्वर्ण मन्दिर बाला, ज्ञानवापी	2 कि.मी.
	श्री भारत माता मन्दिर, काशी विद्यापीठ	3 कि.मी.
	काशी के प्रसिद्ध घाट क) दशाश्वमेध घाट ख) अस्सी घाट ग) नमो घाट घ) जैन घाट	

केवल साइकिल रिक्शा व टोटो,बाइक एवं ऑटो रिक्शा द्वारा

नोट : यात्री अपने सामान की सुरक्षा स्वयं करें एवं शहर में बायें चलें तथा बच्चों का ध्यान रखें।

सम्मेद शिखरजी जाने का मार्ग - वाराणसी → राजघाट पुल → मुगलसराय → सासाराम → डेहरी-ऑन-सोन → डोभी मोड़ → शेरघाटी, डुमरी

अयोध्या जाने का मार्ग - वाराणसी से बाबतपुर, जौनपुर 60 कि.मी., सुलतानपुर 140 कि.मी., फैजाबाद, अयोध्या, वाराणसी से 200 कि.मी.।

खजुराहो जाने का मार्ग - वाराणसी से मिर्जापुर, रीवां, सतना, पन्ना, खजुराहो, वाराणसी 410 कि.मी.।

इलाहाबाद जाने का मार्ग - वाराणसी से इलाहाबाद 130 कि.मी. औरई, गोपीगंज, हंडिया, अंदावा मोड पर श्री 1008 भगवान आदिनाथ तपस्थली मन्दिर जी एवं धर्मशाला

लोकेशन मैदागिन मंदिर

लोकेशन नरिया मंदिर

लोकेशन खोजवाँ मंदिर

लोकेशन लिंक

भेलूपुर से वाराणसी रेलवे स्टेशन - 5 कि.मी

भेलूपुर से बस स्टैंड - 5.8 कि.मी

लाल बहादुर शास्त्री अंतराष्ट्रीय एयरपोर्ट ,वाराणसी - 29 कि.मी

कार्यालय: श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन तीर्थ भेलूपुर (काशी) वाराणसी उ. प्र.

कार्यालय संपर्क सूत्र :+91 89328 08815 , 7317202202

वेबसाइट https://shreeparasnathjaintirthkashi.com

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन गर्भ , जन्म, तप कल्याणक भूमि भेलूपुर वाराणसी

"प्रभु की स्मृति हम सबके जीवन में दिशा, साधना और सम्यक जीवन की प्रेरणा है।

मूलनायक श्री पार्श्वनाथ भगवान की वेदी

प्राचीन प्रतिमा श्री पार्श्वनाथ भगवान
विक्रम सम्वत 1925

श्री चन्द्रप्रभ भगवान की वेदी पर विराजमान प्राचीन प्रतिमाएँ

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की वेदी पर विराजमान प्राचीन प्रतिमाएँ

आधुनिक सर्वसुविधा युक्त ए सी सहित कमरों की धर्मशाला

तीर्थ यात्रा के पथ पर...

प्राचीन प्रतिमाओं के दर्शन
श्री दिगंबर जैन पार्श्वनाथ तीर्थ भूमि
भेलूपुर , वाराणसी

प्राचीन प्रतिमा श्री आदिनाथ भगवान
संवत 1040

श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाएँ

प्राचीन चौबीसी
संवत **1173**

प्राचीन चौबीसी
संवत **1173**

प्राचीन अष्टधातु प्रतिमा
विक्रम संवत 1334

प्राचीन चौबीसी
संवत **1173**

प्राचीन चौबीसी
संवत **1173**

प्राचीन मूलनायक प्रतिमा
श्री पार्श्वनाथ भगवान
संवत **1664**

प्राचीन चौबीसी
संवत **1173**

यहाँ की प्रतिमाओं की प्रचीनता की जानकारी
श्री प्रकाश चंद जैन (कौशाम्बी वाले) वाराणसी द्वारा बताई गई है

प्राचीन प्रतिमाओं के दर्शन
श्री दिगंबर जैन पार्श्वनाथ तीर्थ भूमि भेलूपुर , वाराणसी

प्राचीन प्रतिमा
प्रशस्ति रहित

प्राचीन प्रतिमा
चतुर्थ कालीन

प्राचीन अरिहंत
परमेष्ठी प्रतिमा
प्रशस्ति रहित

प्राचीन अष्टधातु चौबीसी
लगभग 500 वर्ष प्राचीन

मानस्तंभ

प्राचीन अरिहंत
परमेष्ठी प्रतिमा
प्रशस्ति रहित

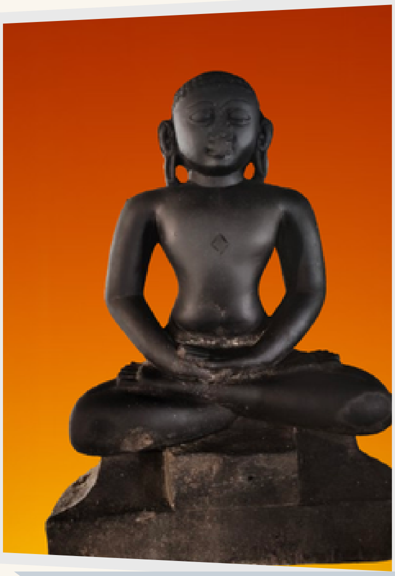
प्राचीन अरिहंत परमेष्ठी प्रतिमा
प्रशस्ति रहित

प्राचीन अरिहंत परमेष्ठी प्रतिमा
प्रशस्ति रहित

यहाँ की प्रतिमाओं की प्रचीनता की जानकारी
श्री प्रकाश चंद जैन (कौशाम्बी वाले) वाराणसी द्वारा बताई गई है

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन तीर्थ ,भेलूपुर , वाराणसी
म्यूजियम में रखे अवशेष

तीर्थ यात्रा के पथ पर...

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन तीर्थ ,भेलूपुर , वाराणसी म्यूजियम में रखे अवशेष

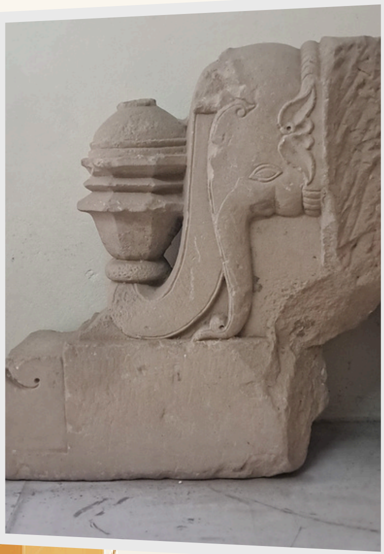

श्री सुपार्श्वनाथ दिगंबर जैन गर्भ , जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक भूमि भदैनी,जैन घाट गंगा नदी तट , वाराणसी

तीर्थयात्रा में सहयोग देने वाला भगवान बनता है

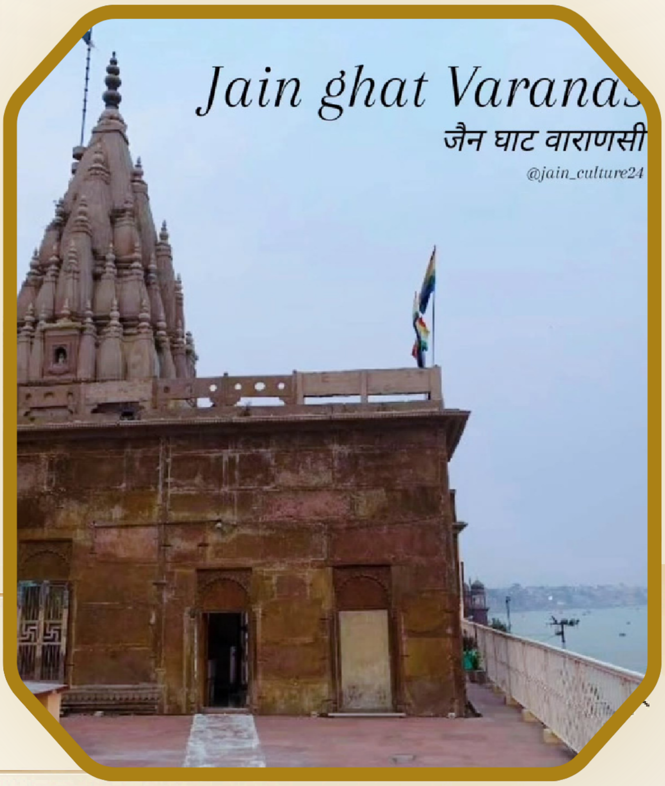

गूगल मैप लोकेशन के लिए क्यू .आर .कोड स्कैन करें

वर्ल्ड की चौथे नंबर की नगरी
श्री दिगंबर जैन श्रेयांशनाथ गर्भ , जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक भूमि सारनाथ , वाराणसी

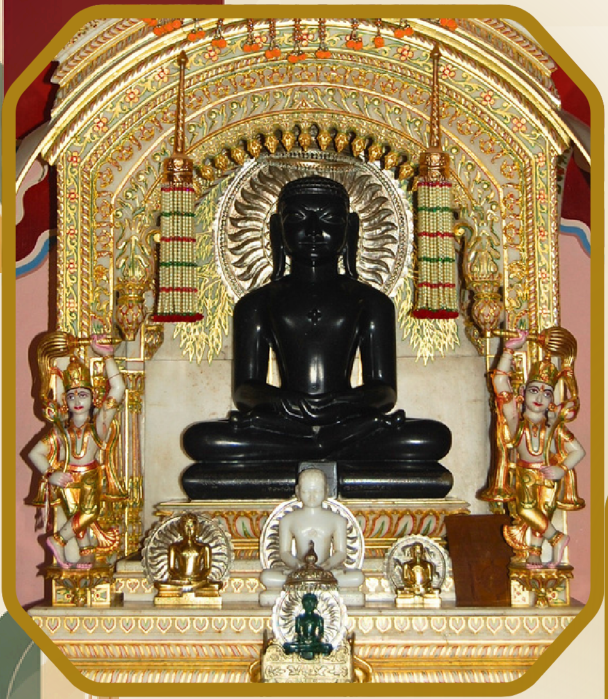

जैन मंदिर के पास स्थित ,बौद्ध धमेख स्तूप, सारनाथ
प्रारंभिक निर्माण: मौर्यकाल में लगभग 3री शताब्दी ईसा
गुप्तकाल में पुन:निर्माण लगभग 5वीं–6वीं शताब्दी में करवाया गया

अशोक सिंह स्तम्भ जोकि भारत का राष्ट्रीय चिन्ह है
– लगभग 2600 वर्ष प्राचीन ऐतिहासिक धरोहर है
भारत सरकार ने 26 जनवरी 1950 को सारनाथ के सिंह स्तम्भ के शीर्ष को भारत के राजचिह्न के रूप में अपनाया।
स्थान: सारनाथ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश
निर्माण काल: लगभग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व

श्री दिगंबर जैन चन्द्रप्रभ गर्भ , जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक भूमि चंद्रावती ,गंगा नदी तट , वाराणसी

“ जहाँ जिनवरों के चरण पड़े, वहाँ की धूल भी साधना का संदेश देती है।

पद-पद पर श्रद्धा हो, कण-कण में विनय हो
यही तीर्थयात्रा की सार्थकता है

तीर्थ यात्रा के पथ पर...

काशी के दिगंबर जैन मंदिर

पंचायती जैन मंदिर

स्याद्वाद जैन महाविद्यालय

नारिया जैन मंदिर

खोजवाँ जैन मंदिर

तीर्थ यात्रा के पथ पर...

जय जिनेन्द्र

अहिंसा परमो धर्मः

दिगंबर जैन के अनुसार 24 तीर्थकरों की
पंचकल्याणक भूमि स्थल

क्रम	तीर्थकर	गर्भ कल्याणक (स्थान)	जन्म कल्याणक (स्थान)	तप कल्याणक (स्थान)	ज्ञान कल्याणक (स्थान)	मोक्ष कल्याणक (स्थान)
1	आदिनाथ	अयोध्या	अयोध्या	प्रयाग	अयोध्या/प्रयाग	कैलाश पर्वत (अष्टापद)
2	अजितनाथ	अयोध्या	अयोध्या	अयोध्या	अयोध्या	सम्मेदशिखर
3	संभवनाथ	श्रावस्ती	श्रावस्ती	श्रावस्ती	श्रावस्ती	सम्मेदशिखर
4	अभिनंदननाथ	अयोध्या	अयोध्या	अयोध्या	अयोध्या	सम्मेदशिखर
5	सुमतिनाथ	अयोध्या	अयोध्या	अयोध्या	अयोध्या	सम्मेदशिखर
6	पद्मप्रभ	कौशाम्बी	कौशाम्बी	कौशाम्बी	कौशाम्बी	सम्मेदशिखर
7	सुपार्श्वनाथ	वाराणसी	वाराणसी	वाराणसी	वाराणसी	सम्मेदशिखर
8	चंद्रप्रभ	चंद्रपुरी (वाराणसी)	चंद्रपुरी (वाराणसी)	चंद्रपुरी (वाराणसी)	चंद्रपुरी (वाराणसी)	सम्मेदशिखर
9	पुष्पदंत	काकंदी	काकंदी	काकंदी	काकंदी	सम्मेदशिखर
10	शीतलनाथ	भद्दलपुरी (विदिशा)	भद्दलपुरी (विदिशा)	भद्दलपुरी (विदिशा)	भद्दलपुरी (विदिशा)	सम्मेदशिखर
11	श्रेयांसनाथ	सारनाथ	सारनाथ	सारनाथ	सारनाथ	सम्मेदशिखर
12	वासुपूज्य	चंपापुरी	चंपापुरी	चंपापुरी	चंपापुरी	चंपापुरी
13	विमलनाथ	कम्पिलापुर	कम्पिलापुर	कम्पिलापुर	कम्पिलापुर	सम्मेदशिखर
14	अनंतनाथ	अयोध्या	अयोध्या	अयोध्या	अयोध्या	सम्मेदशिखर
15	धर्मनाथ	रत्नपुरी रौनाही	रत्नपुरी रौनाही	रत्नपुरी रौनाही	रत्नपुरी रौनाही	सम्मेदशिखर
16	शांतिनाथ	हस्तिनापुर	हस्तिनापुर	हस्तिनापुर	हस्तिनापुर	सम्मेदशिखर
17	कुंथुनाथ	हस्तिनापुर	हस्तिनापुर	हस्तिनापुर	हस्तिनापुर	सम्मेदशिखर
18	अरनाथ	हस्तिनापुर	हस्तिनापुर	हस्तिनापुर	हस्तिनापुर	सम्मेदशिखर
19	मल्लिनाथ	मिथिला /सुरसंद	मिथिला /सुरसंद	मिथिला /सुरसंद	मिथिला /सुरसंद	सम्मेदशिखर
20	मुनिसुव्रतनाथ	राजगृही / राजगीर	राजगृही / राजगीर	राजगृही / राजगीर	राजगृही / राजगीर	सम्मेदशिखर
21	नमिनाथ	मिथिला /सुरसंद	मिथिला /सुरसंद	मिथिला /सुरसंद	मिथिला /सुरसंद	सम्मेदशिखर
22	नेमिनाथ	शौरीपुर बटेश्वर	शौरीपुर बटेश्वर	गिरनार पर्वत	गिरनार पर्वत	गिरनार पर्वत
23	पार्श्वनाथ	वाराणसी	वाराणसी	वाराणसी	बिजौलिया/अहिच्छत्र	सम्मेदशिखर
24	महावीर स्वामी	कुण्डलपुर (नालंदा)	कुण्डलपुर (नालंदा)	कुण्डलपुर (नालंदा)	कुण्डलपुर (नालंदा)	पावापुरी
		वैशाली	वैशाली	वैशाली	वैशाली	

दिगंबर जैन मंदिर अयोध्या

1. वर्तमान में यहाँ पर कटरा के दिगम्बर जैन मंदिर में भगवान सुमतिनाथ की टोंक है। यहाँ पर भगवान अजितनाथ, अभिनंदननाथ की टोंक है। सरयू नदी के तट पर भगवान अनंतनाथ की टोंक है। बक्सरिया टोले में मन्दिर के पीछे की ओर आदिनाथ का एक छोटा सा जिन मंदिर है यही श्री आदिनाथ की टोंक कहलाती है।
2. कटरा मंदिर में सन् 1952 में आ. श्री देशभूषण जी महाराज की प्रेरणा से भगवान आदिनाथ, भरत और बाहुबली की तीन मूर्तियां विराजमान की गई हैं।
3. कटरा मोहल्ले में ही एक टोंक है जिसमें भरत-बाहुबली के चरण विराजमान हैं।

इतिहास/ग्रंथों के अनुसार सन् 1330 में अयोध्या में अनेक जैन मंदिर थे। महाराजा नाभिराज का मंदिर, पार्श्वनाथ बाड़ी, सीताकुंड, सहस्त्रधारा, स्वर्गद्वार आदि अनेक जैनायतन विद्यमान थे।

श्री संपर्कऋषभदेव दिगम्बर जैन मंदिर अयोध्या
बड़ी मूर्ति ,रायगंज ,अयोध्या
संपर्क सूत्र :73768 79723 ,94505 23104

दिगंबर जैनधर्म में अयोध्या के बिन्दु

(1) अयोध्या अनंतानंत तीर्थंकरों की जन्मभूमि है, प्रत्येक काल में सभी 24 तीर्थंकरों का जन्म अयोध्या में ही होता है।

(2) अयोध्या को शाश्वत तीर्थ कहा गया है।

(3) अयोध्या की रचना इन्द्रों द्वारा की गई है।

(4)"अरिभिः योद्धुं न शक्या अयोध्या" अर्थात् कोई भी शत्रु, जिसे जीत न सके, उसे अयोध्या कहते हैं।

(5) अयोध्या के साकेता, विनीता, सुकौशला जैसे नाम भी शास्त्रोल्लिखित हैं।

(6) अयोध्या में इस युग के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव सहित 5 तीर्थंकर जन्मे हैं।

(7) अयोध्या में अनंतों बार तीर्थंकरों के जन्म अवसरो पर सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से धनकुबेर ने करोड़ों-करोड़ों रत्नों की वर्षा की है अतः यह रत्नगर्भा तीर्थभूमि कहलाती है।

(8) अयोध्या में ही इस युग के प्रथम राजा भगवान ऋषभदेव हुए हैं, जिन्होंने इस धरती पर शिक्षा का सूत्रपात किया।

(9) अयोध्या से ही असि (शस्त्र विद्या), मसि (लेखन विद्या), कृषि (खेती), विद्या (अध्ययन-अध्यापन), वाणिज्य (व्यापार) और शिल्प (कला) जैसी षट्-क्रियाएँ भगवान ऋषभदेव द्वारा जीवन जीने के लिए सिखाई गई हैं।

(10) अयोध्या में ही भगवान ऋषभदेव ने अपनी पुत्री ब्राह्मी को अ, आ आदि अक्षर लिपि सिखाई, जो आज भी ब्राह्मी लिपि के नाम से सुसिद्ध है और सुन्दरी पुत्री को 1, 2 आदि अंकलिपि सिखाई, जो आज भी गणित विद्या के रूप में हम सबके सामने विकसित है।

(11) अयोध्या ही भगवान ऋषभदेव के प्रथम पुत्र भगवान भरत चक्रवर्ती का जन्मस्थान है। इन्हीं 'भरत' के नाम से इस देश का नाम 'भारत' है।

(12) अयोध्या से ही इक्ष्वाकुवंश की वृद्धि हुई है। भरत के प्रथम पुत्र अर्ककीर्ति के नाम से इस इक्ष्वाकुवंश को ही सूर्यवंश की संज्ञा प्राप्त हुई है। इसी के साथ ऋषभदेव भगवान के द्वितीय पुत्र बाहुबली के पुत्र सोमयश के नाम से चन्द्रवंश भी प्रसिद्ध हुआ। अतः अयोध्या से सूर्यवंश और चन्द्रवंश दोनों ही इक्ष्वाकुवंश की शाखाएं प्रसिद्ध हुई हैं।

(13) अयोध्या में ऋषभदेव भगवान के उपरांत इनके पुत्र भरत से शुभारंभ करके 14 लाख इक्ष्वाकुवंशीय राजाओं ने लगातार राज्य करने के उपरांत दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त किया है और भगवान ऋषभदेव के समस्त 101 पुत्र भी तपस्या करके मोक्ष गये हैं।

(14) अयोध्या भगवान ऋषभदेव के अलावा भगवान अजितनाथ, भगवान अभिनंदननाथ, भगवान सुमतिनाथ और भगवान अनंतनाथ, इन तीर्थंकरों का भी जन्मस्थान है।

(15) अयोध्या में युग के आदि में 81 खण्ड (मंजिला) का "सर्वतोभद्र राजमहल" था, जिसमें भगवान ऋषभदेव का जन्म हुआ था। जबकि भगवान ऋषभदेव के शरीर की ऊँचाई 500 धनुष अर्थात् 3000 फुट की मानी गयी है।

(16) अयोध्या से ही प्रथम चक्रवर्ती भरत ने षट्खण्ड धरा पर विजय प्राप्त करके राज्य किया था।

(17) अयोध्या में ही दशरथ के पुत्र भगवान श्री रामचन्द्र का जन्म हुआ, जिन्होंने अंत में दिगंबर जैन धर्म के अनुसार मुनि दीक्षा धारण कर मोक्ष प्राप्त किया है । जैन आगम के अनुसार इनका जन्म इक्ष्वाकुवंशी परम्परा में लगभग 9 लाख वर्ष पूर्व हुआ था।

(18) अयोध्या में ही सती सीता ने अपने अखण्ड शील के प्रभाव से अग्नि को सरोवर बनाया था और आर्यिका श्री पृथ्वीमती माताजी के द्वारा आर्यिका दीक्षा लेकर 62 वर्ष तक घोर तपश्चर्या करके अंत में समाधिमरणपूर्वक स्वर्ग में प्रतीन्द्र पद प्राप्त किया था।

(19) अयोध्या से ही भोगभूमि के उपरांत कर्मभूमि की व्यवस्था प्रारंभ हुई और भगवान ऋषभदेव ने प्रजा को जीवन जीने की कला सिखाई।

(20) अयोध्या में सौधर्म इन्द्र द्वारा सर्वप्रथम मध्य में एक जिनमदिर और पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर इन चार दिशाओं में एक-एक जिनमदिर का निर्माण किया गया था।

अनादि दिगंबर जैन धर्म मैं अयोध्या का ग्रंथों में उल्लेख

1. जिनेन्द्रदेव द्वारा कथित मध्यलोक के बीचों-बीच जंबूद्वीप है। इसके मध्य स्थित सुदर्शनमेरु के दक्षिण में भरतक्षेत्र है। इसके आर्यखण्ड की राजधानी अयोध्या है। इसे 'साकेता', 'विनिता' और 'सुकौशला ' भी कहते हैं। इस आर्यखण्ड में उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी के दोनों कालों में सुषमा सुषमा आदि नाम से छः कालों का परिवर्तन होता रहता है ।

1. प्रत्येक चतुर्थकाल में चौबीस-चौबीस तीर्थंकर जन्म लेते रहते हैं। इस नियम के अनुसार इस राजधानी अयोध्या में अतीत काल में अनंतानंत चौबीसी हो चुकी हैं और भविष्यत काल में भी अनंतानंत चौबीसी होंगी। वर्तमान में हुंडावसर्पिणी होने से तृतीय काल के अंत में ही भगवान ऋषभदेव हुए थे और तृतीयकाल में तीन वर्ष साढ़े आठ मास शेष रहने पर ही मोक्ष चले गये थे। इसी काल दोष से इस बार पांच तीर्थंकर ही अयोध्या मैं हुए है शेष 19 तीर्थंकर अन्यत्र रत्नपुरी आदि में जन्मे हैं। इस प्रकार जैन धर्म अनादिनिधन है एवं तीर्थंकर परंपरा भी अनादिनिधन है।

2. अयोध्या की पवित्र भूमि पर ही भगवान ऋषभदेव ने अपनी दोनों पुत्रियों को अक्षर और गणित विद्या में पारंगत करके सभी पुत्रियों को सम्पूर्ण विद्याओं-कलाओं में निष्णात कर दिया था।

3. अयोध्या में ही भगवान अजितनाथ के बाद सागर चक्रवर्ती हुए हैं। देव के निमित्त से वैराग्य प्राप्त कर सगर चक्री ने एवं उनके साठ हजार पुत्रों ने जैनेश्वरी दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्त किया है। सागर के पौत्र भगीरथ ने दीक्षा लेकर गंगा के तट पर ध्यान किया था तब देवों ने उनके चरणों का अभिषेक किया था जिसका प्रवाह गंगा नदी में मिल जाने से गंगा ने नदी तीर्थ रूपता को प्राप्त हो गई है।

4. जैन रामायण के अनुसार इसी सूर्यवंश में राजा अनरण्य के पुत्र दशरथ ने दिगंबर जैन मुनि दीक्षा ली थी। रामचन्द्र के भाई भरत ने भी दीक्षा लेकर निर्वाण प्राप्त किया है। जब रामचन्द्र भाई लक्ष्मण के मोह में व्याकुल थे तभी सीता के पुत्र लव-कुश ने दिगंबर जैन मुनि दीक्षा ली थी।

5. रामचंद्र त्रेसठ शलाका पुरूषों में से आठवे बलभद्र लक्ष्मण आठवे नारायण और रावण आठवे प्रतिनारायण हुए है ,इस प्रकार अगणित महापुरुषों ने इस अयोध्या को पवित्र किया है | अनन्तमती ने यहाँ पर आर्यिका दीक्षा ली

शाश्वत तीर्थभूमियाँ : अयोध्या एवं श्री सम्मेदशिखर जी

जैनधर्म में दो शाश्वत तीर्थभूमियाँ मानी गयी हैं। 1. अयोध्या, 2. सम्मेदशिखर।

अयोध्या नगरी को जैनधर्म में शाश्वत तीर्थंकर जन्मभूमि कहा गया है अर्थात् प्रत्येक काल में होने वाले तीर्थंकरों का जन्म अयोध्या में ही होता है अतः यह अयोध्या अनंतानंत तीर्थंकरों की जन्मभूमि कहलाती है। इसी के साथ समस्त तीर्थंकरों का निर्वाण अर्थात् मोक्षगमन सम्मेदशिखर तीर्थ (गिरिडीह-झारखंड) से होता है। अतः सम्मेदशिखर जी भी जैनियों की पावन स्थली अनंतानंत तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि कही जाती है। यह शाश्वत और अकाट्य नियम है कि समस्त तीर्थंकरों का 'जन्म' अयोध्या में और 'निर्वाण' सम्मेदशिखर जी से ही होता है। अतः इन दोनों ही तीर्थभूमियों को "शाश्वत तीर्थभूमि" की संज्ञा प्राप्त है। शाश्वत का अर्थ अजर, अमर, अविनश्वर अर्थात् जिसका कभी विनाश न हो, ऐसी ये दो तीर्थभूमियाँ जैनधर्म में मान्यता प्राप्त हैं। इसके साथ ही जैनधर्म के सैकड़ों तीर्थ, अतिशय क्षेत्र, सिद्धक्षेत्र, कल्याणक क्षेत्र, तीर्थक्षेत्र आदि के रूप में सारे देश में वंदना और पूज्यता के योग्य हैं।

लेकिन इस शाश्वत नियम में कतिपय कालदोष के कारण वर्तमान में कुछ परिवर्तन भी हुआ है। तीर्थभूमियाँ तो शाश्वत ही हैं, लेकिन अयोध्या में सभी 24 तीर्थंकरों के जन्म की अपेक्षा इस युग के केवल 5 तीर्थंकरों का जन्म इस काल में हुआ है। इसके साथ ही सम्मेदशिखर जी से भी समस्त 24 तीर्थंकरों के निर्वाण की अपेक्षा 20 तीर्थंकरों का निर्वाण वहाँ से हुआ है। अर्थात् अयोध्या में तीर्थंकर ऋषभदेव, तीर्थंकर अजितनाथ, तीर्थंकर अभिनंदननाथ, तीर्थंकर सुमतिनाथ और तीर्थंकर अनंतनाथ का जन्म हुआ है। शेष 19 तीर्थंकरों का जन्म विभिन्न तीर्थभूमियों पर हुआ है। इसी प्रकार 20 तीर्थंकरों का निर्वाण सम्मेदशिखर जी से हुआ तथा अन्य 4 तीर्थंकरों ने अन्य से निर्वाण प्राप्त किया है। इस कालदोष को हुण्डावसर्पिणी कालदोष कहा जाता है। जैनधर्म में कालचक्र सिद्धान्त के अनुसार वर्तमान में यह पंचमकाल चल रहा है।

जय जिनेंद्र

॥ संपूर्ण जानकारी एवं संपर्क ॥

अहिंसा परमो धर्मः

तीर्थ दर्शन • धर्म प्रचार • सेवा सहयोग • सदैव साथ

बेबसाइट

संपूर्ण जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट देखें

Shri Parasnath Jain Tirth Kashi

Jindharma.com

YouTube

प्रवचन, यात्रा, तीर्थ एवं अन्य वीडियो के लिए

Jaindharmvani

Jain world vidhya

प्रतिदिन शांतिधारा देखें

YouTube: Parashnath Janmbhumi Bhelupur Varanasi

QR कोड द्वारा सीधे देखें

गूगल मैप

श्री पार्श्वनाथ दिगंम्बर जैन तीर्थ, भेलूपुर, वाराणसी

QR कोड द्वारा स्थान देखें

सहयोग

सकल दिगंबर जैन समाज (काशी)
वाराणसी(उत्तर प्रदेश),

महातीर्थ यात्रा डायरेक्टरी टीम

विशेष सहयोग :रानू भैया नोहटा 78790 68125

संयोजना : डॉ विवेकानंद जैन ,बी एच यू वाराणसी 9450538093

ए आई डिजाईन : महावीर जैन भोपाल 6260466070

ग्राफ़िक्स : प्रशीश जैन बांसवाड़ा 9414104059

सिंघई नितिन जैन अरिहंत कम्प्यूटर्स टीकमगढ़ 82260 60609

सहयोग: प्राशु जैन 7440574558 संभव जैन भोपाल 62601 51350

भदैनी जैन घाट ,
गंगा नदी तट

|| श्री जिनेन्द्राय नमः ||

" संमाज की एकता – संस्कृति की शक्ति "

अहिंसा
समता
सहयोग
संस्कार
हम सबका
संकल्प

धर्म
संस्कृति
सेवा
समाज
हमारी
पहचान

श्री दिगम्बर जैन समाज (काशी)

वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

पदाधिकारी गण

काशी
अनादि...
अनंत...
आस्था की
अविरल धारा...

क्र.	नाम	पद
1	ऋषभ चंद जैन (आर सी जैन)	सभापति / अध्यक्ष
2	सिंधई अरुण कुमार जैन	उप सभापति
3	राकेश जैन	उप सभापति
4	सिंधई संजय जैन	उप सभापति
5	डॉ. के.के. जैन	उप सभापति
6	प्रदीप चंद जैन	प्रधान मंत्री
7	विनोद कुमार जैन (चांदी वाले)	समाज मंत्री
8	सिंधई सौरभ जैन	कोषाध्यक्ष
9	विनोद कुमार जैन (जाली वाले)	सह-कोषाध्यक्ष
10	प्रमोद कुमार बगड़ा	भंडार मंत्री
11	प्रतीक जैन	भंडार मंत्री
12	डॉ. के.के. जैन	अध्यक्ष सारनाथ मंदिर / धर्मशाला
13	आदीश जैन	मंत्री सारनाथ
14	सिंधई संजय जैन	भेलुपुर धर्मशाला मंदिर अध्यक्ष
15	सिंधई पवन जैन	धर्मशाला मंत्री, भेलूपुर

क्र.	नाम	पद
16	सिंधई राहुल जैन	मंदिर मंत्री, भेलूपुर
17	अरूण कुमार जैन	पंचायती मंदिर अध्यक्ष
18	रोहित कुमार जैन	पंचायती मंदिर मंत्री
19	सिंधई अरुण कुमार जैन	अध्यक्ष खोजवाँ
20	सिंधई दीपक जैन	मंत्री खोजवाँ मंदिर
21	राकेश जैन	अध्यक्ष, नरिया मंदिर
22	अजीत कुमार जैन	मंत्री नरिया मंदिर
23	सिंधई आलोक जैन	मंत्री नरिया मंदिर
24	किशोर जैन	प्रचार मंत्री
25	राकेश कुमार जैन	सांस्कृतिक मंत्री
26	आशीष जैन	शास्त्र मंत्री
27	कमलेश चंद जैन	मंत्री वस्तु भंडार
28	सिंधई आनंद कुमार जैन	सह-मंत्री भंडार
29	मनोज कुमार जैन	औषधालय मंत्री
30	सिंधई ईशान जैन	अस्पताल मंत्री, भेलूपुर

तीर्थक्षेत्र मैनेजर (आवास एवं भोजन व्यवस्था)	विशाल जैन सुरेंद्र कुमार	7317202202

समाज
सेवा
संस्कृति
तीर्थ संरक्षण
सहयोग

एकता
सेवा
संस्कार
समृद्ध काशी

|| धर्म के साथ • समाज के लिए • सदैव समर्पित ||